10

''प्रभु में आनन्दित रहो''

(फिलिप्पियों 3:1-3)

आपको किसी वक्ता से सुनने में यह अनुभव मिला होगा। बहुत देर तक बातें करने के बाद वह कहता है, ''अन्त में'' आप सीधे खड़े हो जाते हैं, अपना सामान इकट्ठा करने लगते हैं, बच्चों को चलने के लिए तैयार करते हैं और निकलने को तैयार हैं। फिर वह वक्ता बोलता रहता है ... बोलता रहता है ... और बोलता रहता है। उस अवसर पर आपकी जो भी भावनाएं होंगी, फिलिप्पियों के अध्याय 3 का आरम्भिक भाग कुछ ऐसे ही लगता है। पौलुस ''निदान, हे भाइयो'' शब्दों के साथ अध्याय को आरम्भ करता है और फिर दो और अध्याय लिख देता है।

लेखक ध्यान दिलाते हैं कि यूनानी (*loipon*) का अनुवाद ''निदान'' अवस्था परिवर्तन का शब्द हो सकता है। यानी इससे नये विचार का परिचय हो सकता है। वे कहते हैं कि पौलुस ने फिलिप्पियों 1:13 में शब्द के उस रूप का इस्तेमाल किया, जहां यह अनुवादित शब्द ''शेष सब लोगों में'' का भाग है और 4:3 में जहां इसका अनुवाद ''और अन्य'' अनुवाद है। वे सुझाव देते हैं कि 3:1 में इसका अनुवाद ''और अब'' (गुडस्पीड), ''जो भी हो'' (LB), या कुछ ऐसा होना चाहिए। वे सही हो सकते हैं पर अधिकतर अनुवादों में ''अनन्तता'' (KJV, NKJV, ASV, NASB, NIV, RSV, NRSV, CEV) या ''संक्षेप में'' (CJB, TEV) है।[1]

याद रखें कि फिलिप्पियों की पत्री पौलुस के कुछ पत्रों (जैसे रोमियों) की तरह क्रमबद्ध निबन्ध नहीं है। यह व्यक्तिगत पत्र है और ऐसे पत्र औपचारिक संगठन की परवाह किए बिना एक विषय से दूसरे विषय पर उछल जाते हैं। एक और ढंग से इस पर ध्यान देते हैं: निजी पत्र किसी मित्र का भेंट के लिए मिलने आने जैसा है। क्या आपका कोई मित्र कभी आपके पास आया जिसने उठकर जाते हुए कहा, ''अलविदा'' और दरवाज़े तक चला गया पर वहां और तीस मिनट तक बातें करने के लिए खड़ा रहा?

परन्तु ''निदान, हे मेरे भाइयो'' शब्दों की व्याख्या होने के बावजूद पौलुस ने उन्हें यह ज़ोर देने के लिए इस्तेमाल किया कि अगली बात बहुत अधिक महत्वपूर्ण होगी: ''निदान, हे मेरे भाइयो, *प्रभु में आनन्दित रहो*'' (फिलिप्पियों 3:1क)।

याद दिलाने के लिए (3:1क)

आनन्दित होना पत्र में बार-बार आने वाला विषय है। पहले पौलुस ने आनन्द करने की बात की थी (देखें 1:18; 2:17, 18, 28)। यहां फिर उसने अपने पाठकों से ''आनन्दित'' होने को कहा। ''आनन्दित'' शब्द वर्तमान में है और निरन्तर आनन्दित रहने का सुझाव देता है। 3:1 में प्रेरित ने यह महत्वपूर्ण बात जोड़ दी: ''*प्रभु में* आनन्दित रहो।'' पौलुस के कहने का अर्थ शायद यह था कि उन पर चाहे कोई भी पहाड़ क्यों न टूट पड़े, फिलिप्पी लोग ''प्रभु में'' थे और इस

कारण उनके पास आनन्दित रहने का कारण था। एलेस मोटायर ने लिखा है कि पौलुस के कहने का अर्थ था ''उसमें अपने आनन्द को ढूंढ़ो।''[2] आपके हालात जो भी हों, यदि आप ''प्रभु में'' हैं तो आपके पास आनन्दित होने का कारण है:

> आपकी सम्पत्ति या आपका धन खो सकता है।
>
> आपका साथी आपको छोड़ सकता है या आपके बच्चे आपको निराश कर सकते हैं।...
>
> आपका स्वास्थ्य गिर सकता है, या आप के कदम लड़खड़ा सकते हैं।...
>
> तब भी आप ''प्रभु में'' हैं–सो आनन्दित हों!

एवन मिलोन ने लिखा है, ''कोई वेतन के दिन और सुहाने मौसम में आनन्दित हो या न हो; परन्तु मसीही व्यक्ति सदैव 'प्रभु में आनन्दित' हो सकता है। मसीह के साथ सम्बन्ध मसीही जीवन की बहुत बड़ी सुनिश्चितता है।''[3] विलियम बार्कले ने इस सम्बन्ध को ''मसीही आनन्द की अनश्वरता''[4] का आधार बताया है।[4] कहीं और पौलुस ने इस बात पर ज़ोर दिया है कि *कोई बात* ''हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी'' नहीं कर सकती (रोमियों 8:38, 39)।

संदर्भ के प्रकाश में पौलुस यह भी कह रहा हो सकता है, '' *केवल* प्रभु में आनन्दित रहो।'' कुछ लोग उसमें जो *उन्होंने* किया था आनन्द कर रहे थे, परन्तु पौलुस अपने पाठकों से केवल प्रभु में और जो कुछ *उसने* किया है उसी में, आनन्दित रहने का इच्छुक था।

दोहराव (3:1ख)

हम आनन्दित होने के विषय पर वापस आएंगे, पर थोड़ा घूमकर। आनन्दित होने के निर्देश देने के बाद पौलुस ने ये परेशान करने वाले शब्द जोड़ दिए: ''वे ही बातें तुम को बार–बार लिखने में मुझे तो कुछ कष्ट नहीं होता, और इस में तुम्हारी कुशलता है'' (आयत 1ख)। मैं इन शब्दों को ''परेशान करने वाले'' कहता हूं क्योंकि हमें यह पक्का पता नहीं है कि ''वे ही बातें'' का क्या अर्थ है।

- वह फिलिप्पियों के नाम पिछले एक पत्र की बात कर रहा हो सकता है जिसमें उसने इन्हीं विषयों पर चर्चा की थी। परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए व्यक्ति का लिखा हर पत्र सम्भालकर नहीं रखा गया है। यूजीन पीटरसन के शब्दों में ''मुझे पहले पत्रों में लिखी बातों को दोहराने में कोई दिक्कत नहीं है, ... सो वे बातें इस प्रकार हैं।''[5]
- पौलुस इस बात से पहले कहे गए शब्दों ''प्रभु में आनन्दित रहो'' की बात कर रहा हो सकता है। उसे इस ताड़ना को दोहराने में कोई दिक्कत नहीं थी (देखें 4:4)। फिलिप्स के संस्करण में है ''ऐसी नसीहत को दोहराने से मैं उक्ताता नहीं।'' यदि फिलिप्पी लोग आनन्द के लिए प्रभु की ओर देखते थे, तो इससे उन्हें अपने ऊपर भरोसा रखने के विरुद्ध रक्षा मिलनी थी। जिसकी पौलुस चर्चा करने वाला था।
- पौलुस अगले शब्दों ''कुत्तों से सावधान ...'' रहने की बात कर रहा हो सकता है।

''वे ही बातें'' हो सकता है कि वे उन लोगों के सम्बन्ध में पहली चेतावनियां हों, जिनकी मंशा या काम सही नहीं हैं (देखें 1:15क, 17, 18)।

पौलुस जो भी कहना चाहता हो, हमें कम से कम इतना पता चल सकता है कि मूल सच्चाइयों को दोहराना बुरी बात है। दोहराव अति हो सकता है पर कुछ दोहराव आवश्यक होता है। जैसे हर माता-पिता और शिक्षक जानता है। दोहराने से सिखाया जा सकता है। इसके अलावा आत्मिक सच्चाइयों को दोहराना, जैसे पौलुस ने कहा, उसके सुनने वालों की ''कुशलता'' है। पतरस ने लिखा:

> इसलिए यद्यपि तुम ये बातें जानते हो, और जो सत्य वचन तुम्हें मिला है, उसमें बने रहते हो, तौभी मैं तुम्हें इन बातों की सुधि दिलाने को सर्वदा तैयार रहूंगा और मैं यह अपने लिए उचित समझता हूं, कि जब तक मैं इस डेरे में हूं, तब तक तुम्हें सुधि दिला दिला कर उभारता रहूं (2 पतरस 1:12, 13)।

दुख की बात है कि कुछ लोग शिकायत करते हैं, ''हमें वही पुरानी सच्चाइयां बार-बार न बताओ! हम कुछ नया और अलग सुनना चाहते हैं!'' पौलुस ने अनुमान लगा लिया था कि ऐसा होने वाला है:

> क्योंकि ऐसा समय आएगा कि लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे पर कानों की खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिए बहुतेरे उपदेशक बटोर लेंगे और अपने कान सत्य से फेरकर कथा-कहानियों पर लगाएंगे (2 तीमुथियुस 4:3, 4)।

मिलोन ने लिखा है कि ''आधुनिक श्रोता, पौलुस के विचारों को उलटने के कारण नयेपन और बार-बार दोहराने की कमी को अपने लिए कष्टदायक और उक्ता देने वाला लगता है।'' उसने आगे कहा, ''यदि सुसमाचार को सुनाया जाना है तो नयेपन की ओर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है। ... बड़ा सवाल यह नहीं है कि 'क्या यह नया है?' बल्कि यह है कि 'क्या यह सत्य है?''[6]

परमेश्वर के वचन के शिक्षकों और प्रचारकों के रूप में हमें ''उस पुरानी, पुरानी कहानी'' को नया बनाए रखने के लिए वचन पर और समझ के साथ, ताज़ा उदाहरणों के साथ और शायद श्रोताओं के देखने के लिए चार्टों के रूप में सहायक सामग्री के साथ पूरी कोशिश करते रहना चाहिए। परन्तु हम ''किसी और सुसमाचार'' को सुनाने के दबाव में न आएं (देखें गलातियों 1:6)। हम बुनियादी सच्चाइयों को लोगों को बताने से कभी उकताएं नहीं, क्योंकि इससे हमारे सुनने वालों की मज़बूती होगी और वे सुरक्षित रहेंगे! पौलुस ने जवान प्रचारक तीमुथियुस से कहा ''तू वचन का प्रचार कर, समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ उलाहना दे और समझा'' (2 तीमुथियुस 4:2)। मार्शल कीबल ने कहा है कि ''समय और असमय'' का अर्थ है ''जब वे इसे चाहते हों और जब वे इसे न चाहते हों!''

त्याग (3:2)

पिछले दो पाठों ने सकारात्मक ज़ोर देने के बाद आयत 2 लगभग एक स्तब्ध करने वाली

बात पर आती है: ''कुत्तों से चौकस रहो, उन बुरे काम करने वालों से चौकस रहो, उन काट कुट करने वालों से चौकस रहो।'' यह सम्भवतया पत्र की सबसे नकारात्मक बात है। ''निदान'' शब्द के साथ लहजे में एकदम बदलाव से कइयों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि फिलिप्पियों के पत्र में कई पत्र हैं; इस धारणा के समर्थन का कोई बाहरी प्रमाण नहीं है।

मुझे लहजे या सुर में बदलाव को समझने में कोई दिक्कत नहीं है। पौलुस ने उन्हीं लोगों पर ध्यान केन्द्रित रखा था, जिनसे वह प्रेम करता था, पर फिर उसने अपना ध्यान उन पर लगा लिया, जिन्होंने उसे हानि पहुंचानी थी। यदि आप किसी से अत्यधिक प्रेम करते हैं तो आप उसे हानि पहुंचाने वाले किसी भी व्यक्ति का विरोध भी उतना ही करेंगे। मुझे अपनी मां की बात याद आती है। यदि आप उससे मिलते तो वह आपको एक छोटी, दयालु और प्रेम करने वाली स्त्री के रूप में प्रभावित कर देती है। फिर भी मैं आपको बताना चाहूंगा कि यदि कोई उसके प्रियजनों को धमकी देता तो वह उस पर ज़रूर आग-बबूला हो सकती थी। मिलोन ने टिप्पणी की है, ''कोमल आयतों में तो है ही, यहां भी प्रेम पत्र ही है। यदि आपके घर को आग लगी हुई हो तो आप अपने प्रियजनों पर ही चिल्लाएंगे। हालात की गम्भीरता ठोस तरीके अपनाने की मांग करती है।''[7]

पौलुस के प्रिय फिलिप्पियों की आत्मिक रक्षा के लिए कौन खतरा था? कुछ लोगों का मानना है कि ये धर्मांतरित यहूदी थे (देखें मत्ती 23:15), परन्तु अधिकतर लोग सहमत हैं कि यहूदी लोग मत धारण करने वाले शिक्षक थे। जब पौलुस 2 कुरिन्थियों में यहूदी मत धारण करने वाले शिक्षकों पर बात कर रहा था तो उसने इसी शब्दावली का इस्तेमाल किया, जो उसने यहां की है (देखें 2 कुरिन्थियों 11:13)। यहूदी मत धारण करने वाले शिक्षक थे, तो यहूदी जो मसीही बन चुके थे पर अभी भी मूसा की व्यवस्था पर टिके हुए थे और सिखाते थे कि मसीही लोगों को यहूदी मत को मानना आवश्यक है। प्रेरितों 15 में हम इनके विषय में पढ़ते हैं:

> फिर कितने [यहूदी मसीही] लोग यहूदिया से आकर भाइयों [अन्यजाति] को सिखाने लगे कि यदि मूसा की रीति पर तुम्हारा खतना न हो तो तुम उद्धार नहीं पा सकते (आयत 1)।
>
> परन्तु फरीसियों के पंथ में से, जिन्होंने उठकर कहा कि उन्हें [अन्यजातियों को] खतना कराना और मूसा की व्यवस्था को मानने की आज्ञा देनी चाहिए (आयत 5)।

प्रेरित और अन्य अगुवे इस मसले पर चर्चा के लिए यरूशलेम में इकट्ठा हुए थे (प्रेरितों 15:6-29)। उनके निष्कर्षों से मामला सुलझ जाना चाहिए था। परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लोगों ने एक अर्थ में कहा कि ''अन्यजातियों को खतना कराने या अन्य रीतियों को मानने और मूसा की व्यवस्था के संस्कारों को मानने की आवश्यकता नहीं है।'' (देखें आयतें 24, 28, 29)। परन्तु गहरे बैठे पूर्वाग्रह को खत्म करना कठिन है। गलातियों के नाम पौलुस का पत्र प्रत्यक्ष रूप में (देखें गलातियों 5:2, 3, 6; 6:12, 13, 15), और रोमियों के नाम उसका पत्र परोक्ष रूप से (देखें रोमियों 2:28, 29) इसी गलती के ऊपर है। (आज भी हमारे बीच में लोग हैं, जो मसीही लोगों के ऊपर व्यवस्था के कुछ भाग को थोपने की कोशिश करते हैं-जैसे सब्त [सातवां दिन] को मानना।)

पौलुस के पास यह मानने का कारण था कि यह विधर्म फिलिप्पी की कलीसिया के लिए

खतरा है। हो सकता है कि उस पर पवित्र आत्मा ने प्रगट किया हो। हो सकता है कि यह फिलिप्पी से मिली ताज़ा खबर का भाग हो-यह खबर जिससे इपफ्रुदीतुस को पता चला कि फिलिप्पी के लोग उसके लिए कितने परेशान हैं। सम्भवतया पौलुस को इतना ही मालूम था कि यह आवश्यक है कि कुछ लोग जो व्यवस्था को मानने पर ज़ोर देते हैं एक दिन सामने अवश्य आएंगे। हर हाल में उसने अपने पाठकों को चौकस करने के लिए अपने ज़बानी शस्त्रागार में से लगभग हर शस्त्र इस्तेमाल किया। यह समझने के लिए कि उसकी बातें वास्तव में कितनी विनाशकारी थीं, आपको अपने आपको यहूदी व्यक्ति की सोच वाले बनना पड़ेगा।

पौलुस ने कहा, ''कुत्तों से चौकस रहो'' (आयत 2क)। यदि आप वहां रहते हैं, जहां कुत्तों को लाड़ प्यार से पाला जाता है, तो अपने मन से इस बात को निकाल दें। बल्कि ''उन कुत्तों पर'' विचार करें ''जो पूर्वी नगरों में बिना घर और बिना मालिक के ''गली का गंद-मंद खाकर गुज़ारा करते, आपस में झगड़ते और उधर से गुज़रने वालों पर हमला करते हैं, पूर्वी नगरों में घूमने वाले कुत्तों को है।''[8] ''कुत्तों'' शब्द का इस्तेमाल हमेशा वचन में अपमानजनक अर्थ में ही हुआ है (देखें व्यवस्थाविवरण 23:18; 1 शमुएल 24:14; 2 राजाओं 8:13; भजन संहिता 22:16, 20; मत्ती 7:6; 15:26, 27; प्रकाशितवाक्य 22:15)। यहां थोड़ी सी विडम्बना की झलक मिलती है। रब्बियों में एक कहावत पाई जाती थी: ''संसार की जातियां [यानी अन्यजातियां] कुत्तों की तरह हैं।''[9] पौलुस ने इसे उल्टा घुमा दिया और कहा कि ये यहूदी (यहूदी मसीही, पर अभी भी यहूदी) कुत्तों जैसे हैं।

फिर पौलुस ने अपने सुनने वालों से ''बुरे काम करने वालों से चौकस'' रहने को कहा (फिलिप्पियों 3:2ख)। झूठे शिक्षक बेशक अपने आपको भले काम करने वाले मानते थे, पर प्रेरित ने कहा कि वे बुरे काम करने वाले हैं-क्योंकि वे अन्यजातियों पर वह बांधना चाहते थे, जो परमेश्वर ने नहीं बांधा था। वे उसके वचन में जोड़ने के दोषी थे (देखें प्रकाशितवाक्य 22:18)।

फिर पौलुस ने फिलिप्पियों को ''काट-कूट करने वालों से चौकस'' रहने की चेतावनी दी (फिलिप्पियों 3:2ग)। मूल धर्मशास्त्र में ''काट कूट'' (यू.: *katomen*) शब्दों का खेल है। ''काट'' के लिए यूनानी शब्द (जैसा आयत 3 में मिलता है) (*peritome*) है। *Periteome* ''काटना'' (*tome*) के लिए शब्द के साथ ''गिर्द'' (*peri*) के अर्थ वाले पूर्वसर्ग को मिलाता एक मिश्रित शब्द है। आयत 2 में पौलुस द्वारा इस्तेमाल किया गए शब्द ने पूर्वसर्ग peri को हटाकर इसकी जगह *kata* पूर्वसर्ग लगा दिया जिसका अर्थ ''नीचे'' है। इस बदलाव से यहूदियों द्वारा किए जाने वाले खतने के संस्कार से यह शब्द मूर्तिपूजकों द्वारा शरीर के अंग अंगच्छेद हो गया। NASB वाली मेरी प्रति में फिलिप्पियों 3:2 ने ''मूल [तया] अंगच्छेद'' की जगह ''नकली खतना'' है। कई अनुवादों में ''अंगच्छेद'' शब्द का रूप मिलता है जिसमें NKJV, NIV, NRSV, CJB हैं। यूनानी पुराने नियम (सप्तति) अनुवाद में बाल के नबियों द्वारा अपने शरीरों को घायल करने के ढंग के वर्णन के लिए *katatome* के एक रूप का इस्तेमाल किया (1 राजाओं 18:28)।

वैकल्पिक चिकित्सकीय प्रबन्ध के रूप में खतना करने में कोई बुराई नहीं है; परन्तु जब लोग आवश्यक धार्मिक समारोह के रूप में मसीही लोगों पर इसे थोपने की कोशिश करने लगे तो पौलुस ने इसे ''काट-कूट'' नाम दिया। खतना किए जाने के कार्य का कोई आत्मिक महत्व

नहीं है। प्रेरित ने गलातियों को बताया था, ''और मसीह यीशु में न खतना, न खतनारहित कुछ काम का है, परन्तु केवल, जो प्रेम के द्वारा प्रभावित करता है'' (गलातियों 5:6; देखें 6:15)। फिर उसने कहा, ''न खतना कुछ है, और न खतनारहित, परन्तु परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना ही सब कुछ है'' (1 कुरिन्थियों 7:19)।

हम में से कइयों ने चेतावनी के ये चिह्न देखें हैं: ''सावधान! रास्ता बन्द है!'' ''सावधान! पुल कमज़ोर है!'' हम ऐसे चिह्नों को अपने जोखिम पर नज़रअंदाज करते हैं। एक अर्थ में पौलुस ने फिलिप्पियों को बताया कि ''सावधान! सावधान! सावधान!'' झूठे शिक्षक रौबधार लगते होंगे। उनकी बातें विश्वास उत्पन्न करने वाली होंगी, पुराने नियम से अच्छी तरह परिचित होंगे। तौभी पौलुस ने कहा कि वे ''कुत्ते'' ''बुरे काम करने वाले,'' ''काट-कूट'' करने वाले हैं! ''सावधान!''

प्रकाशन (3:3)

पौलुस ने आगे कहा, ''क्योंकि खतना वाले तो हम ही हैं'' (आयत 3क)। मूल यूनानी धर्मशास्त्र में अंग्रेज़ी बाइबल में इस्तेमाल किया ''असली'' शब्द नहीं है। पौलुस ने केवल इतना कहा, ''खतना वाले तो हम ही हैं।'' ''खतना'' शब्द का इस्तेमाल यहूदियों के सम्बन्ध में किया जाता था (देखें गलातियों 2:8, 9)। एक अर्थ में प्रेरित कह रहा था, ''हम मसीही लोग *असली* यहूदी यानी परमेश्वर की *असली* संतान हैं। रोमियों के नाम उसने लिखा था:

> क्योंकि वह यहूदी नहीं, जो प्रगट में यहूदी है; और न वह खतना है, जो प्रकट में है, और देह में है। पर यहूदी वही है, जो मन में है; और खतना नहीं है, जो हृदय का और आत्मा में है; न कि लेख का: ऐसे की प्रशंसा मनुष्यों की ओर से नहीं, परन्तु परमेश्वर की ओर से होती है (रोमियों 2:28, 29)।

खतना अब्राहम और उसकी संतान को दी गई वाचा के सम्बन्ध का प्रतीक था (उत्पत्ति 17:9-14; देखें निर्गमन 6:7)। यह कहना कि ''खतनावाले तो हम ही हैं'' ये अर्थ देता था कि ''अब, हम मसीही लोग परमेश्वर की वाचा के लोग हैं। हम 'परमेश्वर का (नया) इस्राएल' [देखें गलातियों 6:16]। हमें प्राचीन इस्राएल से की गई प्रतिज्ञाएं विरासत में मिली हैं'' (देखें रोमियों 9:24-26; 1 पतरस 2:9, 10)। आज कुछ लोग सिखाते हैं कि शारीरिक इस्राएल का आज भी भविष्य के लिए परमेश्वर की योजनाओं में विलक्षण योगदान है, पर बाइबल ऐसी कोई शिक्षा नहीं देती।

यह दावा करने के बाद की मसीही लोग ''असली खतना वाले'' हैं, पौलुस ने उनकी जो ''असली खतने वाले'' हैं अर्थात जिनका ''खतना ... मन में'' हुआ है (देखें रोमियों 2:29) तीन विशेषताएं बताईं। *पहली, वे ''परमेश्वर की अगुआई से उपासना करते'' हैं* (आयत 3ख)। मूल धर्मशास्त्र में कुछ दिक्कतें हैं। मेरी इंटरलीनियर बाइबल के अनुसार यूनानी भाषा में मूल अर्थ ''[जो] परमेश्वर [की] आत्मा [के द्वारा] आराधना करते हैं।'' इसकी व्याख्या कई प्रकार से हो सकती है, जैसा कि विभिन्न अनुवादों से पता चलता है।

- KJV: ''आत्मा (spirit) में परमेश्वर की आराधना करते।''
- RSV: ''आत्मा (spirit) में परमेश्वर की आराधना करते।''
- NKJV: ''आत्मा (Spirit) में परमेश्वर की आराधना।''
- NASB: ''परमेश्वर की आत्मा (Spirit) में आराधना।''
- NIV: ''परमेश्वर के आत्मा (Spirit) के द्वारा आराधना।''
- CEV: ''परमेश्वर के आत्मा (Spirit) की सामर्थ से आराधना।''

यदि आत्मा के लिए ''spirit'' का 's' छोटा है तो सम्भवतया पौलुस यूहन्ना 4:24 में कही गई यीशु की बात की तरह ही कह रहा था: ''परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करने वाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें।'' बिना सही व्यवहार के आराधना के सही काम करना सम्भव है। ऐसा होने पर वास्तविक आराधना नहीं होती (देखें 1 कुरिन्थियों 11:27, 28)।

यदि आत्मा के लिए ''Spirit'' का 'S' बड़ा है तो पौलुस हमारी आराधना में पवित्र आत्मा की भूमिका पर ज़ोर दे रहा हो सकता है। हमें परमेश्वर की प्रेरणा पाए लोगों द्वारा प्रगट की गई आत्मा के निर्देषों के अनुसार आराधना करनी आवश्यक है (देखें प्रेरितों 2:42; 2 तीमुथियुस 3:16, 17)। पवित्र आत्मा प्रार्थना करने में हमारी सहायता करता है (रोमियों 8:26, 27), जो परमेश्वर के सामने हमारी आराधना का केन्द्र होता है। इसके अलावा हमारे जीवनों में आत्मा द्वारा दी जाने वाली धार्मिकता, शांति और आनन्द (रोमियों 14:17) भी बिना किसी संदेह के आराधना से भरे मन में योगदान देते हैं।

''आत्मा में आराधना करना'' आज के कुछ धार्मिक समूहों द्वारा किए जाने वाले करिश्माई कार्यों के लिए *नहीं* है। इन में से कई सभाओं की अति उस शान के खिलाफ़ है, जो आराधना की पहचान होनी चाहिए (देखें 1 कुरिन्थियों 14:40)।

छोटे ''s'' या बड़ा ''S'' का इस्तेमाल हो, ज़ोर ''मसीही आराधना की गम्भीर आत्मिक स्वभाव'' पर है।[10] पौलुस नकली खतने की शरीर पर निर्भरता (शारीरिक संस्कार) और ''असली खतने की आत्मा आत्मिक आराधना'' पर निर्भरता में अन्तर कर रहा था।

दूसरा, पौलुस ने कहा कि ये जो असली खतने हैं ''मसीह यीशु पर घमण्ड करते हैं'' (आयत 3ग)। झूठे शिक्षक अपने रीति रिवाज़ों में घमण्ड करते थे, परन्तु हमारा घमण्ड उस में है जो हमारे लिए मरा। मोटायर के अनुसार, ''घमण्ड'' के लिए ''और कठोर अनुवाद'' ''गर्व'' शब्द होगा।[11] पौलुस ने गलातियों 6:14क वाले शब्द का ही एक रूप इस्तेमाल किया: ''पर ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का घमण्ड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का जिस के द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूं।'' हम उस पर गर्व नहीं करते जो हम ने किया है (देखें रोमियों 4:2), पर उस पर करते हैं जो *उसने* हमारे लिए किया है।

तीसरा, पौलुस ने कहा, ''खतना वाले तो हम ही हैं जो ... शरीर पर भरोसा नहीं रखते'' (आयत 3घ)। संदर्भ में इसका अर्थ यह हो सकता है कि हम खतने के शारीरिक समारोह में भरोसा नहीं रखते। परन्तु अधिकतर अनुवादों में संकेत है कि यह प्रासंगिकता (आत्मा के) भीरत के विपरीत (शरीर के बाहर) बाहरी रूप के लिए है:

- TEV-''हम बाहरी समारोह में कोई भरोसा नहीं रखते।''
- CJB-''हम मानवीय योग्यताओं में भरोसा नहीं रखते।''
- CEV-''हम अपने किए पर शेखी नहीं मारते।''

मानवीय जीवों के रूप में जो कुछ हम देख सकते हैं यानी वक्ताओं और शिक्षकों की समझ में, कार्य के संगठित कार्यक्रमों में, प्रार्थना सभा की उपयुक्त जगह में, अपनी आराधनाओं में बड़ी भीड़ में, वचन को मानने वालों की संख्या में, या जिसे भी *हम प्राप्त कर सकते हैं,* भरोसा रखने की परीक्षा में पड़ जाते हैं। ये सभी बातें नाकाम हो सकती हैं यानी हो सकता है कि ये आज हों कल नहीं। इनके बजाय हमारा भरोसा उसमें यानी प्रभु में होना चाहिए जो न बदलने वाला और न डोलने वाला है (आयतें 4-11)! मेरा मानना है कि जॉन कैलविन सही था जब उसने कहा कि ''अपना भरोसा यानी अपना विश्वास, मसीह के बाहर किसी में भी रखना शरीर में भरोसा रखना है।''[12]

मोटायर ने ''असली खतना'' की तीन विशेषताओं को ''असली धर्म की ऊपर को, बाहर को और अन्दर को पहलू'' के रूप में बताया:[13]

- ऊपर को क्योंकि हम ''परमेश्वर के आत्मा में आराधना करते हैं।''
- बाहर को क्योंकि हम ''मसीह यीशु में घमण्ड करते हैं।''
- अन्दर को क्योंकि हम ''शरीर में भरोसा नहीं रखते।''

सारांश

मैंने कहा कि हम ''आनन्दित'' होने की पौलुस की बात में वापस जाएंगे और वह बात यह है कि ''प्रभु में आनन्दित रहो।'' चाहे जो भी हो जाए, उसी में आनन्दित रहो और *केवल* उसी में आनन्दित रहो, शरीर की किसी बात में नहीं। अगले अध्याय में (3:4-11) हम पौलुस के जीवन और प्रभु में वह आनन्दित क्यों हुआ पर एक संक्षिप्त चित्रण देखेंगे।

इस अध्ययन को समाप्त करने से पहले मैं यह स्पष्ट कर दूं कि आप और मैं किस प्रकार से ''असली खतना'' का भाग बने हैं। हमारे अगले पाठ का वचन पाठ यह ज़ोर देता है कि हम ऐसा ''विश्वास के आधार पर'' (3:9) यानी भरोसा करना, आज्ञाकारी विश्वास रखते हैं। कुलुस्सियों के नाम पौलुस के पत्र में उसने बपतिस्मे को उस भरोसा रखने वाले आज्ञापालन में जोड़ा:

> उसी [मसीह] में तुम्हारा ऐसा खतना हुआ है, जो हाथ से नहीं होता, ... और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिस ने उस को मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे। और उसने तुम्हें भी, जो अपने अपराधों, और अपने शरीर की खतना रहित दशा में मुर्दा थे, उसके साथ जिलाया, और हमारे सब अपराधों को क्षमा किया (कुलुस्सियों 2:11-13)।

यदि आपने बपतिस्मा (पानी में डुबकी) लेकर अभी तक यीशु में अपने विश्वास और भरोसे को नहीं दिखाया है, तो आज ही दिखाएं।

टिप्पणियां

[1]व्यक्तिगत पत्र लिखते हुए पौलुस ने ''निदान'' जैसे शब्द का इस्तेमाल पहली बार नहीं किया। थिस्सलुनीकियों के पहले पत्र के द्वारा तीन/पांचवें भाग में उसने लिखा, ''निदान, हे भाइयो'' (1 थिस्सलुनीकियों 4:1)। [2]अलेस मोटायर, *दि मैसेज ऑफ़ फिलिपियंस: जीज़स अवर जॉय,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़, संपा. जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1984), 147. [3]एवन मेलोन, *प्रैस टू दि प्राइज़* (नैशविल्ले: टर्वटियथ सेंचुरी क्रिश्चियन, 1991), 72. [4]विलियम बार्कले, *दि लैटर्स टू दि फिलिपियंस, कोलोशियंस एंड थेस्सलोनियंस,* संशो. संस्क., दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 51. [5]यूजीन एच. पीटरसन, *दि मैसेज: न्यू टैस्टामेंट विद साम्ज़ एंड प्रोवर्ब्स* (कोलोराडो स्प्रिंग्स, कोलोराडो: नवप्रैस 1995), 492. [6]मेलोन, 72–73. [7]वही, 73. [8]जे. बी. लाइटफुट; बार्कले, 53–54 में उद्धृत। [9]बार्कले, 54. [10]राल्फ पी. मार्टिन, *दि एपिस्टल ऑफ़ पॉल टू द फिलिपियंस,* संशो. संस्क., टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़, संपा. आर. वी. जी. टास्कर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 142.

[11]मोटायर, 151. [12]कैल्विन के शब्दों की समीक्षा मार्टिन 144 में दी गई है। [13]मोटायर, 150.